

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तुमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशक्रुणहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये किङ्किङ्काकाणे
॥ षट्चत्वारिंशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ षट्चत्वारिंशः सर्गः ॥

सुग्रीरेण श्रीरामं प्रति स्वकीयभूमण्डलद्रमणवृत्तान्तस्य प्रतिपादनम्

गतेषु वानरेन्द्रेषु रामः सुग्रीरमव्रवीत्।
कथं भवान् रिजानीते सर्वं रै मण्डलं भूरः ॥ 4.46.1 ॥

सुग्रीरश्च ततो राममुराच प्रणतात्वरान्।
श्रयतां सर्वमाख्यास्ये रिस्तरेण रचो मम ॥ 4.46.2 ॥

यदा तु दुन्दुभिः नाम दानवः महिषाकृतिम्।
प्रतिकालयते राली मलयः प्रति परतम् ॥ 4.46.3 ॥

तदा रिरेष महिषो मलयस्य गुहां प्रति।
रिरेष राली तत्रापि मलयः तज्जिघांसया ॥ 4.46.4 ॥

ततोहहं तत्र निष्किण्ठो गुहाद्वारि रिनीतरं।
न च निष्कामते राली तदा संरंसरे गते ॥ 4.46.5 ॥

ततः ऋतजरेगेन आपुपुरे तदा विलम्।
तदहं रिस्मितो दृष्ट्वा भ्रातुः शोकविषादितः ॥ 4.46.6 ॥

अथाहं गतबुद्धिस्तु सुर्यक्तं निहतो गुरुः।
शिला परतसङ्काशा विलद्वारि मया कृता ॥ 4.46.7 ॥

অশকুরনিঙ্কমিতুং মহিষো বিনশিষ্যতি।
ততোহহমাগাং কিঙ্কিকাং নিরাশস্তস্য জীরিতে ॥ 4.46.8 ॥

রাজ্যং চ সুমহৎ প্রাপ্য তারাং চ রুমযা সহ।
মিত্রৈশ্চ সহিতস্তত্র রসামি ব্রিগতজ্বরঃ ॥ 4.46.9 ॥

আজগাম ততো রালী হংরা তং বানরর্ষভঃ।
ততোহহমদদাং রাজ্যং গৌরবাদ্ ভযযন্ত্রিতঃ ॥ 4.46.10 ॥

স মাং জিঘাংসুর্দুষ্টাত্মা রালী প্রর্যথিতেন্দ্রিযঃ।
পরিকালযতে রালী ধারন্তং সচিরৈঃ সহ ॥ 4.46.11 ॥

ততোহহং রালিনা তেন সোহনুবদ্ধঃ প্রধারিতঃ।
নদীশ্চ ব্রিরিধাঃ পশ্যন্ বনানি নগরাণি চ ॥ 4.46.12 ॥

আদর্শতলসঙ্কাসা ততো রৈ পৃথিবী মযা।
অলাতচক্রপ্রতিমা দৃষ্টা গোষ্পদরং কৃতা ॥ 4.46.13 ॥

পূর্বাং দিশং ততো গংরা পশ্যামি ব্রিরিধান্ দ্রুমান্।
পরতান্ সদরীন্ রম্যান্ সরাংসি ব্রিরিধানি চ ॥ 4.46.14 ॥

উদযং তত্র পশ্যামি পরতং ধাতুমণ্ডিতম্।
ক্ষীরোদং সাগরং চৈব নিত্যমন্সরসালযম্ ॥ 4.46.15 ॥

পরিকাল্যমানস্তদা রালিনাভিদ্রতো হ্যহম্।
পুনরারূত্য সহসা প্রস্থিতোহহং তদা ব্রিভো ॥ 4.46.16 ॥

দিশস্তস্যাস্ততো ভূযঃ প্রস্থিতো দক্ষিণাং দিশম্।
ব্রিক্যপাদপসঙ্কীর্ণাং চন্দনদ্রুমশোভিতাম্ ॥ 4.46.17 ॥

দ্রুমশৈলান্তরে পশ্যন্ ভূযো দক্ষিণতোহপরাম্।
অপরাং চ দিশং প্রাপ্তো রালিনা সমভিদ্রতঃ ॥ 4.46.18 ॥

স পশ্যন্ ব্রিধান্ দেশানস্তং চ গিরিসত্তমম্।
প্রাপ্য চাস্তং গিরিশ্রেষ্ঠমুত্তরং সম্প্রধারিতঃ ॥ 4.46.19 ॥

হিমবন্তং চ মেরুং চ সমুদ্রং চ তথোত্তরম্।
যদা ন বিন্দে শরণং বালিনা সমভিদ্ধতঃ ॥ 4.46.20 ॥

ততো মাং বুদ্ধিসম্পন্নো হনুমান্ বাক্যমব্রবীৎ।
ইদানীং মে স্মৃতং রাজন্ যথা বালী হরীশ্চরঃ ॥ 4.46.21 ॥

মতঙ্গেন তদা শপ্তো হস্মিন্নাশ্রমমণ্ডলে।
প্রিশেদ্ যদি বৈ বালী মূর্ধাস্য শতধা ভরেৎ ॥ 4.46.22 ॥

তত্র রাসঃ সুখোহস্মাকং নিরুদ্ভিগ্নো ভবিষ্যতি।
ততঃ পর্তমাসাদ্য ঋষ্যমুকং নৃপাত্মজ ॥ 4.46.23 ॥

ন ব্রিবেশ তদা বালী মতঙ্গস্য ভয়াৎ তদা।
এবং মযা তদা রাজন্ প্রত্যক্ষমুপলক্ষিতম্।
পৃথিবীমণ্ডলং সর্বং গুহামস্ম্যাগতস্ততঃ ॥ 4.46.24 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে বাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে
কিঙ্কিকাণ্ডে ষট্চত্রারিংশঃ সর্গঃ ॥